

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भू-राजनीति के युग में WTO की प्रासंगिकता

www.nextias.com

भू-राजनीति के युग में WTO की प्रासंगिकता

संदर्भ

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) का 14वाँ मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (MC14) 26 से 29 मार्च 2026 तक याओडे, कैमरून में आयोजित होगा। इसका उद्देश्य बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली के सामने वर्तमान चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करना तथा WTO के भविष्य के कार्यों पर निर्णय लेना है।

संकट में WTO: संरचनात्मक और कार्यात्मक चुनौतियाँ

- विवाद निपटान तंत्र का ठप होना:** WTO के अपील निकाय संकट ने नियमों के प्रवर्तन को कमजोर किया है।
 - बाध्यकारी विवाद समाधान के अभाव में नियमों की विश्वसनीयता घटती है और अनुपालन कम होता है।
 - यह बहुपक्षवाद की नींव को ही खतरे में डालता है।
- नियम-निर्माण में ठहराव:** WTO वार्ताएँ डिजिटल व्यापार और ई-कॉमर्स शासन की गति के अनुरूप नहीं चल पाई हैं।
 - वर्तमान नियम 20वीं सदी की व्यापार संरचना को दर्शाते हैं, जो आधुनिक वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के लिए अपर्याप्त हैं।
- निर्णय-निर्माण में गतिरोध:** 166 विविध सदस्य देशों के बीच सर्वसम्मति-आधारित निर्णय-निर्माण धीमी वार्ताओं और कमजोर परिणामों की ओर ले जाता है।
 - यह संस्थागत कठोरता समय पर सुधारों में बाधा डालती है।
- संरक्षणवाद और भू-राजनीति का उदय:** एकतरफा शुल्क, आर्थिक दबाव और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों का बढ़ता प्रयोग।
 - ह नियम-आधारित व्यापार से शक्ति-आधारित व्यापार की ओर बदलाव का संकेत है।

वैश्विक व्यापार का बदलता स्वरूप

- उत्पादन और व्यापार का रूपांतरण:** डिजिटल अर्थव्यवस्था और उभरती अर्थव्यवस्थाओं से प्रौद्योगिकी-प्रधान निर्यात के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ अब रैखिक न होकर नेटवर्क-आधारित हो गई हैं।
- नए व्यापार मुद्दे:** जलवायु-संबंधी व्यापार उपाय (जैसे कार्बन सीमा कर), डेटा शासन और डिजिटल प्रवाह, तथा निवेश सुविधा।
 - ये विकास वर्तमान WTO नियमों और वर्तमान वास्तविकताओं के बीच असंगति को उजागर करते हैं।
- लेन-देन आधारित राजनीति:** वैश्विक व्यवस्था 'लेन-देन आधारित राजनीति' की ओर बढ़ रही है, जहाँ अल्पकालिक लाभ संस्थागत प्रतिबद्धताओं पर प्रभुत्वशाली हो जाते हैं।
 - कमजोर WTO शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं के प्रभुत्व और विकासशील देशों के हाशियाकरण का जोखिम उत्पन्न करता है।
 - WTO की मूल भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार नियमों द्वारा संचालित हो, न कि दबाव द्वारा।

WTO सुधार की आवश्यकता

- विवाद निपटान की विश्वसनीयता बहाल करना:** बाध्यकारी और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य विवाद तंत्र को पुनः स्थापित करना; व्यापार संघर्षों का राजनीतिकरण कम करना; और विश्वास पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक।

- **न्याय और पूर्वानुमेयता सुनिश्चित करना:** कृषि सब्सिडी, बाजार विकृतियाँ और असमान बाजार पहुँच जैसी दीर्घकालिक चिंताओं का समाधान।
 - विशेष एवं भिन्न उपचार (SDT) को वर्तमान वास्तविकताओं के अनुरूप सुधारना। विकासशील देशों का जोर है कि WTO केवल कानून का शासन ही नहीं बल्कि न्याय का शासन है, भी सुनिश्चित करो।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना:** सब्सिडी पर बेहतर रिपोर्टिंग; अनुचित व्यापार प्रथाओं से निपटने के तंत्र; और निगरानी कार्यों को सुदृढ़ करना।
- **संस्थागत लचीलापन:** बहुपक्षीय समझौतों (जैसे ई-कॉमर्स, सेवाएँ) को प्रोत्साहित करना; और सुनिश्चित करना कि वे समावेशी, पारदर्शी और WTO ढाँचे में एकीकृत रहें।
 - लचीले दृष्टिकोण प्रगति को बढ़ावा दे सकते हैं बिना प्रणाली को खंडित किए।

निष्कर्ष एवं आगे की राह

- WTO एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। सुधार केवल तकनीकी नहीं बल्कि प्रणालीगत और मानक-आधारित है। इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, सदस्य देशों के बीच साझा जिम्मेदारी एवं लचीलापन व एकता के बीच संतुलन आवश्यक है।
- यदि MC14 सफल होता है, तो यह WTO की भूमिका को वैश्विक व्यापार शासन के आधार स्तंभ के रूप में पुनः स्थापित कर सकता है। असफलता, हालांकि, एक खंडित और शक्ति-प्रधान व्यापार प्रणाली की ओर बदलाव को तीव्र कर सकती है, जिससे स्थिरता कमजोर होगी, विशेषकर विकासशील देशों के लिए।

स्रोत: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में WTO को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है? यह भी विवेचना कीजिए कि क्या WTO सुधार इसके नियम-आधारित व्यापार प्रणाली को बनाए रखने में इसकी निरंतर प्रासंगिकता सुनिश्चित कर सकते हैं।

